Written by कुमार सौवीर
Thursday, 26 December 2013 04:11

[illegible], [illegible]: [illegible]

[illegible]

क्रसिमस तो खत्म हो गया, लेकनि क्या आपको नहीं लगता है कि महलिा-संदर्भ में एक नये वचिार-वमिर्श और अभयिान की सख्त जरूरत है। मैं समझता हूं कि अब हम देखें कि हम कसि जमीन पर खड़े हैं, महलिाओं के बारे में। देखें और जांचें कि कतिना फर्क है, हमारी और दीगर मांओं की सामाजकि परस्थितियों के बीच। हमारी मांओं में कुन्ती को कसिी सूरज नामक व्यक्ति से नाजायज रशि्ते के फलस्वरूप जन्मे अपने शशिु को नदी में बहाना पड़ता है, और उसकी बरामदी तथा अपने कौमार्य को अखण्ड करार देने के लिए उस शशिु को कुन्ती के कान से पैदा होने का क्षेपक सुनाया जाता है। बावजूद यह शशिु आगे बढ़कर इस पौराणकि कथा में महान सेनानी और दानवीर बन जाता है। हां, ठीक है कि उसका वरिोध पाण्डवों से है, लेकनि उसकी जायज वजहें भी तो हैं। वह अपना प्राण तो देता है, लेकनि अपनी जुबान नहीं।

आप अगर कसिी बेबस महलिा की दारूण कथा को महसूस करना चाहें तो सीधे काशी यानी वाराणसी पहुंच जाइये ना। यहां के महान संत रामानंद से ज्ञान-चक्षु खोलने वाले उस बच्चे से पूछयि जो ज्ञान हासलि करने के लिए लहरतारा के वशिाल तालाब की सीढ़यिों पर भोर-तड़के पर पहुंच जाता है और आखरिकार कबीर बन कर पूरी मानवता को आडम्बर और धोखेबाजी के धंधे से नजिात दलिाने के लिए अपना पूरा जीवन समर्पति कर देता है। लेकनि यह संत कबीर लाख चाहे तो उस पीड़ा को नहीं व्यक्त कर सकता जो उसकी मां ने महसूस कयिा होगा। वह अभागी तो उस बच्चे को जन्म देने के बाद उसे अंधेरे में छोड़ देने पर मजबूर हो गयी थी। लोक-लाज की कतिनी दारूण पीड़ा इस महलिा ने झेली होगी, कि कोई वशि्वास तक नहीं कर पायेगा।

और अब मेरी वर्जनि मेरी को देखयि। वह भी कुमारी थी, वर्जनि थी, यानी उसका कौमार्य अक्षत था। लेकनि इसके बावजूद उसने ईशु को जन्म दयिा जो आगे बढ़कर ईसा मसीह बन गया जसिका नाम लेते ही पीड़ा से तप्त मानवता को चंगाई मलि जाती है। हां हां, आज भी। अब यह दीगर बात है कि धंधाबाजों की नजर तो इस क्षेपक को बेचने में भी आमादा है।

लेकनि इस तथ्य को हम कैसे वसि्मृत कर सकते हैं कि मेरी वर्जनि ने अपने बच्चे जीसस को कभी भी खुद से अलग नहीं रखा, बल्कि उसका पालन-पोषण ही कयिा। जीसस महान बन गया तो मेरी भी मदर मैरी वर्जनि हो गयी। मैं समझता हूं कि यूरोप की मैरी वर्जनि ने हठ कयिा और इतहिास में महान हो गयी, जबकि कुन्ती और कबीर की अनाम मां में इतना साहस नहीं रहा कि वह अपने शशिु को सार्वजनकि रूप से अपना सकतीं।

लेकनि इसके लिए केवल मैरी वर्जनि मदर का ही गुणगान कयिा जाना चाहिए। वास्तव में गुणगान तो मदर मैरी की तत्कालीन सामाजकि-आर्थकि परस्थितियों को देते हुए पूरा क्रेडटि दयिा जाना चाहिए जसिने मैरी को साहस दलिाया। जबकि दुख की बात है कि आर्यावर्त में कबीर की मां कुन्ती जैसी महलिाओं में तत्कालीन सामाजकि और आर्थकि वकिास के लोप के चलते इतना साहस नहीं उत्पन्न हो सका कि वे अपने बच्चे के साथ खुद को भी ऐसी महलिाओं और मानवता की मशाल जला सकतीं। खैर, हम तो यह आशा करते हैं कि हमारे समाज में यह हालात ऐसे बन जाएं ताकि कसिी महलिा को कोई अवैध शशिु जन्म देने का कलंक न लगे। लेकनि साथ ही यह भी वकालत करना चाहते हैं कि यदि कोई युवती कसिी अमान्य रशि्ते के चलते गर्भवती हो जाती है, तो उसे अपने जन्म होने वाले शशिु को हरामी का नाम नहीं दयिा जाने के लिए साहस मलिे। और हमारा समाज भी इसमें आगे बढ़-चढ़ कर सामने आये ताकि हमारे देश में भी ईसू जैसी महानतम शख्सयितें मानवता को समृद्ध करती रहें।

मैरी वर्जिन का सम्मान, जबकि कुन्ती कैसे उपहास का पात्र बन गयी ?

आमीन